

५ धननृत्याउनु विद्यापह पर्वतचहुनु धर्मगुनकामगुन एतिछथोकहतपतले
हुंदेन विस्तारगहिननुपछे ॥ ३५ ॥ चारप्रकारले विद्यालिनुहुन्छ गुरुकोचाक
रिगरिकन विद्यापहु पुस्तकदिकनपनिपहु धनदिकनपनिपहु विद्यादीकनपन
विद्यालिनुपछे ॥ ३६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

शतेरथाशनेविद्याशनेपर्वतमाहहेत ॥ शनेधर्मश्चकामश्चया
यामश्चशनेशने ॥ ३५ ॥ गुरुशुश्रुषयाविद्यापुष्करेणधनेनवा ॥
अथवाविद्ययाविद्याचतुर्थेनापलभ्यते ॥ ३६ ॥ एकाक्षरप्रदा
तारिमेगुरुनाभिमन्यते ॥ श्वानयेनिशतैगत्वाचारुडालेखपिजा
यते ॥ ३७ ॥ पुस्तकप्रत्ययाधीर्तनाधीर्तगुरुमनिधौ ॥ नशोभते
सभामध्येजालगर्भइवस्त्रिय ॥ ३८ ॥ ॥ ॥

एकअक्षरपुहाउन्यालाईपनि जोगुरुभनिमोदेन तेसलेशयमोतिकुककोभि
चाजालभेजेमछे ॥ ३७ ॥ गुरुदेउपाठतली आफैपुस्तकहेरिजोपहछुत्थो
सभामध्येजारकोगर्भवाटभयाकोवालकहेसुहावन्देन तसर्थगुरुकामुखीवाटसु

३८ ॥
नुपछे ॥

۱۱۷۱

सिपालुमानिसकोसीपुसुशीलभैरहनुअलशीतमानुपंडितहनुमित्रको
सग्रहगुरुसतिगुराजोछनुकेलेपनिसकिन्देनचोलेपनिचोतसकहेन॥३५

शित्पिशीलमनालस्यपण्डित्योमित्रसंग्रहम् ॥ अचोरहरणीवि
द्यापंचतेचाक्षमोनय ॥ ३९ ॥ नहिजन्मनिज्येष्ठत्वंजेष्ठत्वंग
रामुच्यते ॥ गुराद्गुरात्तरंयातिपयोदधिष्ठतंयथा ॥ ४० ॥ किं
कुलेन विशालेन गुरावान्पूज्यतेन ॥ धनुर्वंशविभुक्षोपि त्रिगु
राकिंकरिष्यति ॥ ४१ ॥ किंकुलेन विशालेन विद्याहिनस्त्वयो
न ॥ अकुलीनोपि विद्वान्मुदेवतेऽपि पूज्यते ॥ ४२ ॥

जन्मले जेरोकुदेन उराले जेरोकुछ जलो हद भंदा दहि भंदा धू धेछ कुं पु त लो ज
न पछि को अछ कुं छ ॥ ४० ॥ उलो कुल ले क्या कुं छ न को गेग छ उ से को पूजा
कुं छ अ धू वी स देखी भया को धनु छ त पनी ता डो डो रिन भया काल क्या कुं छ ॥ ४० ॥
बडा कुल माहा जन्म्या पनी विद्या न भया को शाभा छे न कुल मा फिके छ त पनी पंडी
त भया देवता ले पनी पूजा ग छ न ॥ ४१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जाहासी मपारि गया को छैन ताहासी म दुगा खोज छुत् पारित रि वरुणा पदि दुगा को का
काम छ ॥ ४३ ॥ गुगान या सवैले पूजा गछि वावु को नाम चाहि दैन वसुदेव को को
र को सवैले पूजा गछि वसुदेव ताइ को हि पूजा गदैन ॥ ४४ ॥ ॥ ॥

नात्तार्थ निज ते ना वैयावत्यार न गछति ॥ उनी रोचि गते पार नौ का
या किं प्रयोजनी ॥ ४३ ॥ गुगान सर्वत्र पूज्यते पितृ वंशे निरर्थक ॥
वासुदेव नमस्यति वसुदेव न तेजना ॥ ४४ ॥ गुगान कुर्वत्य दु
रत्नदुरेपि वसती सती ॥ केतकि गधमायाय स्वयं गच्छति य पदा ॥ ४५ ॥
वीद्वत्त्वं च नृपत्वं च न हितुं य पशुक्रमौ ॥ स्वदेशे पूज्यते राजा विद्या सर्वत्र पूज्य

गुगानोद्धताया भयापनि न जिकै तु त्याउतु न सौ केतकि का गंध भुमराखो जिती छ
नृतस्तो ॥ ४५ ॥ वीड्यावत दुर्गराजा दुनु वरो वरे छैन राजा आ फादे समा दु लो छ
पीडित जो सर्व वै गयापनि पूजा गछि ॥ ४६ ॥ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॥

वानक
॥ ८ ॥

यके पुत्र भयापति स पूव भया कुल कत विद्या वत साधु लेष का सग हन ज स च उमा
ले सर्व व उज्या लो गरा उछ ज सै ॥ ४७ ॥ कोहि म नू य विद्या का पा व छै न कोहि ड
व्य का पा व छै न क तिला इ विद्या पति धन पति क तिला इ विद्या पति धन पति छै न ॥ ४८ ॥

ए के ना पि सु पू त्रे रा विद्या यू के त सा धु ना ॥ कु ल पू व सि हे न
चं दे रो व व का स्य ते ॥ ४९ ॥ वी डा म्मा भा ज नै क शि त क शि
द व सि वा न ना ॥ उ न यो भ ज नै क शि त क शि नो त य भा ज ना ॥ ४९ ॥
न मी ति फ लि नो द क्षा न मी ति गु लि नो ज ना ॥ श्रु क्ता श्र च मूर् ख
च मि अ ते नै व नै न्य ते ॥ ४९ ॥ न हि क मी शि च चारि संधा का
ले य यो ज ये त् ॥ आ हारे मै थु नै ति ज्ञा त था ध्या ये ते व च ॥ ५० ॥

फल हु न्या द क्ष जो छै न न म्बु छै न गु रा व त म नु य प ति न म्बु छै उ का को का ॥ ४ ॥
ठ र मु ख ज न मा वि न्या छै न मु हु दै न ॥ ४९ ॥ चार थो क संधा का ल मा न ग नु र बा न
मै थु न ति ज्ञा प ह ॥ ५० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

संघाकालमा आहारगन्धारोगलाग्दुमैथुनगन्धावहतरिसाहा कुरगर्भहृदैन
सयनगन्धादरिहीहृदैन पद्मादेवि आयुक्षीराहृद ॥ ५१ ॥ वेदवेदका
हृद अगजा न्याजहोमगदैरहृन्पातत्पर आशिर्वीददिदैरहृन्पायस्तोरजाकोपू
रोहितचाहिहृ ॥ ५२ ॥

आहारजायतेवाधिगर्भात्कूरश्चजायते ॥ अलक्ष्मीकश्चस
य्यायांसपाठादायुवक्षया ॥ ५१ ॥ वेदवेदांगतत्त्वज्ञोजपहो
मपरायन ॥ आशिर्वीदपरेनित्यंरुमगजपुरोहित ॥ ५२ ॥
प्राज्ञसिग्धोमहिपालछिद्रकर्मविवर्जित ॥ वीजुरेयुपरित्यागे
समोदुखेसुखेसम ॥ ५३ ॥ कुलसिलगुणोपेतसत्पधर्मपरि
यन ॥ अविशेषसलोदक्षोराक्षाधिक्षोवीधियतै ॥ ५४ ॥

उद्विषंतसुदरकसेको कूरकामैर्गन्धी दुखसुखवरोवरमान्यागरिपमाधिपंडित
माथिदानगन्धीरुस्ताम्नाइराजाभनु ॥ ५३ ॥ कुलिनसिललेयुक्तभयाकोगु
नवंतसत्पमाधर्ममातत्परहृन्पासभवातमानान्यासुदरवहंतचतुरएस्ताराजाका
नजि कीनुल्पाउनुभइत ॥ ५४ ॥

चानक ॥ वहनै को धनया को धनिया व्यसन गन्या वहनै लोभि वाजबी वोलन सकन्या वहनै वाग कामगन्या
 आनर निभंदा वच अर्घ्य लोगन्या इ मुखिया नत ल्या ठठ ॥ ५५ ॥ आप्र पहिले को काममा
 ॥ ५६ ॥ तत्परह न्या धैर्य कामगन्या सभल को परिक्षा गन्या पवी वरह न्या उय मज दरह न्या यत्ता ॥ ५७ ॥

अमि विजा
 रगि तुल्य ठठ ॥ ५६ ॥

क्रूर व्यसन निर्लूध मप्रगल्भ सनाने ॥ अनाय व्यय कर्तार नाधि
 पत्ये नियत यत् ॥ ५५ ॥ मुलष्टि ही तो धीर सर्व रत्न परि श
 क ॥ शुचि श्वाव वसायि च धमाध्य सो विधियते ॥ ५६ ॥ आयु
 वेद कृतो भ्यास सर्व ज प्रिय दर्शन ॥ आर्य शिल गुणो पेत यव वै शो
 वी धियते ॥ ५७ ॥ पितृ पितामहो दक्ष सास्त्रज्ञो मिष्ट पाचक ॥
 शुविश्वा कठिन धैर्य वसूषकार प्रसस्यते ॥ ५८ ॥

वैद्य शास्त्रमा अभ्यास गन्या सैव धोकतां न्या देवु देखु सिलाग्दे वडा को शिल भया को एसा वैद्य तु
 ल्या ठठ ॥ ५९ ॥ वावा वराज्यु देखि मान्या पवित्र सुधार को मल अंग कुन्या एसा लाइ र सो इ ॥ ६० ॥
 गन्या तुल्य ठठ ॥ ५८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

एकवेरसूना का समूह न्याचाडो बुद्धगरिलेखन्यासमलिपितान्यासनशास्त्रहेन्या
कोएस्तालाइलेसकतमानु॥ ५८ ॥ थोरेअभिप्रायलेवुडन्यावलियोदेखू
दासुसिलाग्यो भहंकारनभयाकोवडुतचतुरएस्तालाइद्वान्याभितिह॥ ६०

सकडुक्तगृहितार्थोलघुहसोजिताक्षर॥ सर्वसास्त्रसमा
लोकिएयलेखकउच्यते॥ ५८ ॥ जुंगीताकारतत्त्वज्ञो
वलवान्प्रियदर्शन॥ अपमादिसदारक्षप्रतिहारस्यउच्य
ते॥ ६० ॥ समस्तकृतसास्त्रज्ञपंडितश्चतितश्रम॥ धैर्य
शौर्यगुरोपेतसेनाध्यक्षोविधियते॥ ६१ ॥ समस्तहयश
स्त्रज्ञोवाहनेष्वपरजित॥ सौर्यविर्यगुरोपेतअथाध्यक्षोविधियते॥

समस्तकोमततान्यापंडितमिहिततनगन्याधैर्यवाग्भुरकागुराभयाकोए
स्तासदरभन्याकोह॥ ६१ ॥ सवसालिहोवतान्याअश्ववारिमाकुसलभयो
कोचुरोपतिहपरक्रमिपतिहएस्तालाइतवेलाकोअधिकारितुन्याउत॥ ६२ ॥

चारक

॥१०॥

एकवेरभन्याकोसमहिरदुन्याबोलदामाचतुरपराइकोपेटकोकुराजान्याबु
तधीरजस्ताकोतस्तोबोलन्याएस्तालाइइतभनुः॥ ६३ ॥ राजाकोपनिचाक
रकोपनिगुणालक्षणमभंहुजसुलेराजावहुमानगन्धोयोभंडारितुल्याउनु
॥ ६४ ॥

मेधावीवाकपटुप्राज्ञपरचितोपलक्षक॥ धीरेयथोक्तवादीचरण
बहुतोविधीयते॥ ६३ ॥ पार्थिवस्यचभृत्यस्यवदामिगुणालक्षणी॥
येनसर्वदुतेराजाभीडांगारस्तथैवच॥ ६४ ॥ अतयवकुलीनानी
दयाकुर्वतिसाधवः॥ आदिमध्यावसानेषुनतेयास्यतिविक्रिया॥ ६५ ॥
पंडितेषुगुणासर्वमूर्खेदोषास्तुकेवला॥ तस्मान्मूर्खमहत्त्रेषुप्राप्त
एकप्रशस्यते॥ ६६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

चारक

॥१०॥

यसैकारणलेवडाकुलीनकोसंगदयासाधुजनहेरुगछन् एस्तामात्रीसपहिले
पनिमाझमापनिअंत्यमापनिविडवलपादेनः॥ ६५ ॥ पंडितहसुछेउसभगुण
हुंछन् मूर्खछेउसभदोषमात्रेहुंछन् तस्कारणमूर्खहेजागर्भदाएकजाण्यावठि
या॥ ६६ ॥

जीन्मा बुद्धि वंन कन काम लाया पछि राजा कन तीन गरा दुई छ यश दुई छ स्वर्ग प्राप्ति
दुई छ धन पनि ठेर मिल्छ ॥ ६७ ॥ मूर्खलाई काम लाया तीन करा दुई छ अपय
श १ धन को नाश २ नरक मानि अय पछि ॥ ६८ ॥ ॥ ॥ ॥

प्राप्त नियो ज्यमाने तु सति राजा ख्र योग गणा ॥ यश स्वर्ग निवास अ
पुष्कल धन गम ॥ ६९ ॥ मूर्ख नियो ज्यमाने तु त्रयोदोषामही
पते ॥ अयश अथ नाश अथ नरके पतनं कुर्वी ॥ ६८ ॥ तस्माद्गुमि
श्वरे नित्य धर्म कामार्थ सिद्धयेत् ॥ ६९ ॥ यत्किंचित्कुरुते भृत्य
धर्म वा यदि वा सुमति ॥ तेन सर्वद्वैते राजा सुकृते दुष्कृतेऽपि ॥ ७० ॥

तस्कारण राजाले धर्म काम धन वडाउनानि मित्र गरा जीन्मा मानि सलाई का
म लाउनु गरा नभया का लाई छाडनु ॥ ६९ ॥ भृत्य भन्नु चाकर यत्किंचित्पु
पर पुरा पगरे सपनि गरा वत कन काम लाया पछि तेसैले राजा लाई पाप पाप
गन्मा पनि लक्ष्मी को वृद्धि गरी दिछ ॥ ७० ॥ ——— ॥ ——— ॥ ——— ॥

चानक

॥ ११ ॥

जसोगरि सुन को परीक्षा पोति हातिका टिहें छ तसोगरि मनुष्य लाई पति कुल
ले शील ले कर्म परिक्षा गर्नु थाहा पाइ छ ॥ ११ ॥ केहि काम लाई पठाइ क
न चाकर को परीक्षा गरि जांनु ॥ आफु लाइ हरव पयामा हा राख्यु भाई चिन्हि छ
नु आपति पदो माहा मित्र का थाहा हु छ श्री विचार धन सकिया पछि जानि छ ॥ १२ ॥

यथा हेम परीक्षेत ताप ताडन छेदने ॥ तथा पुरुष मये व कुलशी
लेन कर्मणा ॥ ११ ॥ ज्ञातव्या प्रेक्षणो भृत्या बांधवा व्यसना गमे ॥
आपत्काले तथा मित्र भार्या च विभवक्षये ॥ १२ ॥ भृत्या वहु विधा
क्षेया उत्तमा धम मध्यमा ॥ तेनी ये ज्या यथा योग्यी त्रिविधे धन क
र्मसु ॥ १३ ॥ आलक्ष्य मुखं कुरंस्तद्व्यसनि मंगलं ॥ असंतुष्ट
ममक्तं च तज्येद्भृत्यं नराधिपः ॥ १४ ॥

॥ ११ ॥

चाकर भन्या का छे रेत्र कार का हु छ नु उत्तम माहा वटिया तिजस्ता लाई तसे का
म विचार गरि लाउनु ॥ ११ ॥ वहुत अलशी छि चरे को धिलो भी अहाया को नमा
न्या व्यसनी धृत असंतोषी सेवानगर्त्या एस्ता लाइ चाकर नराधुन ॥ १४ ॥

अतिरिसाहा अति कपणी एस्ता स्वामिकन छोडनु कपणी भदापनि गन्थाको
 र नगन्थाको थाहान पाउन्था तेसै भदापनि गन्थाको मिहिन तु मा बोल उन्था ला
 इ छोडि हालनु ॥ ७५ ॥ अहायाको कुरो छोडि अर्कै थोक गन्था स्वास्ति मुख छोरा
 कुराको विचार नगन्था चिकर प्रीति नभयाको दाजु भाई एति थोक गर्छ छोराको

त्यजे स्पामि नम त्युग्रम त्युग्र कपणी त्यजेत ॥ कपणी दविशेय नस्त
 स्माच्च कतमासने ॥ ७५ ॥ वामाभाया सुते मुख प्रथको वा विचार
 क ॥ निस्ते होवै धुवग ध्वन्यजेदस्पमहसुख ॥ ७६ ॥ नकश्चित्कस्य
 चिन्मित्रं नकश्चित्कस्य चित्प्रिय ॥ कारणे देव जायते मित्राणि रिपवस्त
 था ॥ ७७ ॥ कार्यार्थि भजते लोको न तोक परमार्थिक ॥ वत्सक्षीरक्ष
 यष्टव्या परित्यजति मातरं ॥ ७८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कसेको केहि मित्र पनी छैन कसेको पियारा पनि छैन कारणे ले मित्र हुँछ का
 रण ले शत्रु हुँछ ॥ ७९ ॥ आफना काम कारि मित्र सेवा गर्छ परमार्थ कारि
 मित्र कोहि गर्दैन न् वाछे पनि हुँद सकि या पाछे आफ्नो आमालाई छोडछ ॥ ८० ॥

॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥

न
चाक
॥ १२ ॥

शुवारिव्यसनगन्या लाईमिअकुदेन असंतोषिलाईप्रीति कुदेन दरि इला सुख कु
रेण दुर्जन लाई सुमा कुदेन ॥ ७९ ॥ चोरको मान कुदेन दुर्जनको क्षमा कुदेन
वेषाको प्रीति कुदेन छिनारको सत्य कुदेन ॥ ८० ॥ निर्वर्तीयाको बल राजा हो
बालखको रुनि बल हो मूर्खको नबोलु बल हो चोरको कुगो बोलु बल हो ॥ ८१ ॥

कुतो व्यसनिनो निद्रा अट प्रस्य कुतोरति ॥ कुत सौरव्यं दरि दस्य
दुर्जनस्य कुत क्षमा ॥ ७९ ॥ तस्करस्य कुतो मान्य दुर्जनस्य कु
त क्षमा ॥ वेषास्विनां कुत स्नेह कुत सत्यं च कामिना ॥ ८० ॥ इ
र्वलस्य वल राजा बालानां रुदनं वलं ॥ वल मूर्खस्य मोनत्वं चोर
णाममृतं वलं ॥ ८१ ॥ अनाथानां दरि रानां बालहृदयं तपस्वि
नां ॥ अन्यायपरिभूतानां सर्वेषां पार्थिवो गति ॥ ८२ ॥ ॐ ॥

कोहिन दुन्या अनाथको दरि दु को बालखको उठा को तपस्वी हर् को अन्यायप
न्या को र करणामात्रे गति अको है नर ॥ ८२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ १२ ॥

रोगिको निर्द्वनी को शत्रुको डर ले युक्त हुन्याको हृदयमा शोकले उठ्याको मनुष्यको
औषध सञ्जनको दर्शन भयासंतोष हुन्छ ॥ ८३ ॥ रोग भयामा केहि वडो आपत
पयामा शत्रुसंग जुगरा पयामा राजाको द्वारमा शमशान जादामा आउनु वा धव
तसे लाई भन्नु अघि पछिको क्या हो ॥ ८४ ॥

याचितस्यार्थहीनशपशत्रुभिस्त्रासितस्य च ॥ हृदये शोकदग्धश्च
सुहृदसन्मोषधः ॥ ८३ ॥ आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुविग्रहे
राजद्वारे शमशाने वा यत्तिष्ठति स बाधवा ॥ ८४ ॥ भावस्थुर्हि मनु
ष्याणां ज्ञातव्या सर्वकर्मसु ॥ भावेन चुस्तिता कान्ता भावेन दुहितान
ना ॥ ८५ ॥ न देवो विद्यते काष्ठे पाषाणे न च मृन्मये ॥ भावेषु विद्यते
देवस्तस्माद्भावो महत्तरः ॥ ८६ ॥

मातिसको ज्यासुके काममा भावना जस्तोग्यो तस्ते भावस्थुर्हि ॥ भावने मापा
पपुराय ॥ स्त्रीकनचुम्बन आलिंगन भिन्ने भावले गरिन्छ छोरिको चुंबन को वमा
लिनु भिन्ने भावले गरिन्छ ॥ ८५ ॥ काष्ठमा ढुंगामा माटोका मूर्तिमा देवता छैन जाहा
भावना गयो वाही देवता हुन्छ समदेखी वडो भन्नु भावने छ ॥ ८६ ॥

बानक

॥ १३ ॥

शिष्यको देवता गुरु हो गुरुको देवता ज्ञान स्त्री को देवता पुरुष सभको देवता ब्राह्म
ण गुरु ॥ ८७ ॥ ब्राह्मण लाई आगे जस्तो देखेन गुरु लाई देवता जस्तो आमा ला
ई पृथ्वी जस्तो मित्र कने छोरे जस्तो पुत्र लाई पति मित्रे जस्तो देखेन ॥ ८८ ॥

शिष्यारणं देवता चार्ये ज्ञानमाचार्य देवता ॥ देवता योषितां भ
र्तृव्या ह्यरणे जन देवता ॥ ८७ ॥ विप्रं पश्य यथा बहूमाचार्यप
श्य देवता ॥ यथ्वी पश्य यथा माता मित्रं पश्य यथा सुत ॥ ८८ ॥ गुरु
रग्निर्दिजातीनां वरुणा ब्राह्मणो गुरु ॥ पतिरेको गुरु स्त्रीणां सर्वस्या
भ्यागतो गुरु ॥ ८९ ॥ उत्तमस्यापि वर्गस्य नीचो पीठहमागता ॥ पूज
नीचो यथान्यायं सर्वस्याभ्यागतो गुरु ॥ ९० ॥

ब्राह्मणका गुरु अग्नि चोरे वर्णको गुरु ब्राह्मण स्त्रीको गुरु पुरुष सर्वेको गुरु अति
थि ॥ ८९ ॥ उत्तमजातिका घर नीच जाति अभ्यागत आया पति यथा योग्य पूजा ग
र्तुं सर्वेका अपूर्वा आयाका गुरु जस्तो हो ॥ ९० ॥

॥ १३ ॥

देवता कन भक्ति भावना गरि पूजा गनु चि कर कन केहि दिस तो घन उपकार गरि
 शुद्ध को सत्मान गनु ब्राह्मण को इदं वत प्रणाम गरि सतोष गनु ॥ ९१ ॥ धर्म का
 मूल राजा दुनू तप का मूल ब्राह्मण दुनू तस्कार राज मठा उमा ब्राह्मण को पूजा दुई
 ता हो सर्वदा धर्म रहै छ ॥ ९२ ॥

देवता पूजये दुक्त्या भक्त्या दानेन पूजयेत् ॥ शुद्ध पूज्योपचारेण वि
 श्र प्रणति वंदनात् ॥ ९१ ॥ धर्मस्य मूल राजानं सप्तो मूलं च ब्राह्म
 ण ॥ ब्राह्मण यत्र पूज्यते तत्र धर्म स नातन ॥ ९२ ॥ आचार्य फल
 लते धर्म आचार्य फल ते धन ॥ आचार्य फल माप्नोति ह्यो चोरे ह
 त्य लक्षणा ॥ ९३ ॥ भोज्य भोजन शक्तिश्चरति शक्तिर्वरस्त्रिये ॥ विभवा
 दान शक्तिश्च नालस्य तपस फल ॥ ९४ ॥

आचार देवी धर्म दुई आचारे देखि धन पति दुई आचारे गन्या सर्व कार्य फल छ
 न आचार ले अलक्षणी पति नाश दुई ॥ ९३ ॥ खान्या कुरे मा हां खानु सकनु
 सुदरी स्त्री सित भोग पति गनु सकनु संपति भै केन दान गनु सकनु एति मानु तपस्या

॥ ९२ ॥

बानक
॥ १४ ॥

बालके माधर्मगर्नु जिउनु भन्याको अनित्य छ भरे भोले के हे मर्न छ था हा छे नफ
लपानि पाक्या पाकु अवस्य छ तसो जिउनु भनि जानु ॥ ८५ ॥ दंभी को धर्म व्यर्थ
कोबि को न पद्यर्थ ॥ ८६ ॥ चिन न कुन्या को ज्ञान व्यर्थ प्रमादले पला को वेद व्यर्थ ॥ ८६ ॥

बाले चैव चरे धर्म अनित्य रव जु जीवित ॥ फलानामपि पकानां शा
श्वतं पतनं भवेत् ॥ ८५ ॥ सदंभस्य हतो धर्म क्रोधे नैव हतं तप ॥
अहं तस्य हतं ज्ञानं प्रमादेन हतं श्रुतं ॥ ८६ ॥ अदीप्ते गोहो
हो मोहता भुक्ति रसाक्षिणी ॥ उपजीव्या हता कन्या स्वार्थे पाक क्रिया
हता ॥ ८७ ॥ दारिद्र्या धिक् दुःखानि वीधन व्यसना निच ॥ अराज फ
लमे ता नित स्मादान विशिष्यते ॥ ८८ ॥

॥ १४ ॥

अग्नि प्रज्वलित न भै होम गन्ध्या को व्यर्थ साक्षिन रा विद्याया को अन्न व्यर्थ धनमा
लवार छे उलिकन कन्या दान दिया को व्यर्थ आ क्रेति नित मात्र पाक गन्ध्या को व्य
र्थ ॥ ८७ ॥ दारिद्र्य भया को रोगी भया को वीधन भया को केहि वेसन भया को एतिथो
क अविद्या जन्म मादान न गन्ध्या को होत स्कारण दान गदे रहनु ॥ ८८ ॥

धानकापपटाजसाजनुमाहांकाछिचिमिलाजसाधर्मनभयाकामनुव्यततेतेहु
छ॥ ९९ ॥ दुर्जनकासंसर्गछोडिसाधुकोसंगगरातोदिनपुण्यगतिन्यज
लोससारअनित्यहुभनिचानककाविलेशिष्यहसुलाईभदाभया॥ १०० ॥

पलकाईवधानेपुपत्रिकाइवजनुहु॥ तादशासेमनुव्येधुयेचधर्मव
हिकुता॥ ९९ ॥ त्यजेतदुर्जनसंसर्गभजसाधुसमागम॥ कुरुपुण्यम
होगर्वास्मरन्नित्यमनित्यता॥ १०० ॥ इतिप्रथमशतक॥ १ ॥ शास्त्रा
र्थचक्षुषाविद्वान्तरेद्वोनीतिचक्षुषा॥ वेदार्थचक्षुषाविप्राइतरेचारवक्ष
सा॥ १ ॥ राजनिधर्मिनिधर्मिष्टापापेपापासनेसमा॥ राजानमनुवर्ततेपथा

इतिश्रीचानकेसारसंग्रहेभाषायांप्रथमशतकसमाप्त॥ १ ॥ पंडितशास्त्रकाआं
खालेहेछुनु॥ राजानीतिकोआंखालेहेछुनु॥ वेदकाआंखालेवात्सराहेछुनु॥ अरुमनुव्य
चर्मचक्षुलेहेछुनु॥ १ ॥ राजाधर्मिष्टभयाप्रजापनिधर्मीमाझुछराजापाविभया
प्रजापतिपापीहुछपापपुण्यवरोवरुगत्याराजाभयाप्रजापतिहुछनु॥ राजाज्यागछुनु॥ सो
हिप्रजापतीगछुनु॥ २ ॥

राजापथाप्रजा॥ २ ॥

चानक
॥ १५ ॥

उद्यमभयो साहसभयो धैर्यभयो बलभयो बुद्धिभयो पराक्रमभयो एतिष्ठगुणजसंख्यं
हन्तस्मनुष्यदेष्टे देवपतिं उरा उहन् ॥ ३ ॥ आपस्तले सपथगरि केहि फोरफा
रग रि पराक्रमले बलले एतिथो कले गरि पति सर्वथा शत्रुको नाश गर्नु ॥ ४ ॥ पत्र
को विचार गरि दानगर्वा गुण प्रीतिगर्वा आक्रापरिचार संग भोगगर्वा पराईका अभिप्राय
बूझ्नु सग्राममाथुरा भैयु दुर्गर्वा इषा चथोक गुणभया कालाई प्रभु भनु ॥ ५ ॥

उद्यमसाहसं धैर्यं बलवुद्धिपराक्रम ॥ छडे ते यस्य तिष्ठति तस्य देवो
पिशकिते ॥ ३ ॥ साम्राजाने न भेदे न क्रमेण च बलेन च ॥ सर्वशत्रुश
दाशत्रु वर्तनी यो न राधिषे ॥ ४ ॥ पात्रे त्यागी गुणो रगी भोगी परि
जने सह ॥ शास्त्रे बोधारेणो धानु पते पंचलक्षणां ॥ ५ ॥ उत्तमप्र
णिपातेन शूरे भेदेन योजयेत् ॥ लुब्धमर्थप्रदानेन समतुल्यपराक्रमे ॥ ६ ॥ १५ ॥

बडा लाई प्रणाम गरि हात लिनु शूरकन फोफा गरि लोभी कन धनदी समलाई
वरेवर पराक्रम गरि हात लिनु ॥ ६ ॥

आफु छि अर्कालाई न कहनु पराइ का छि इ गोप्य आफु ले बुझि राखनु आफु अंग
कछु बाले लुकाया जस्तो रक्षा गर्नु पराइ को भाव बुझि राखनु ॥ ७ ॥ मन ले चितायो को
वचन ले प्रकासन गर्नु मंत्र जस्तो गुप्रगारि कार्य गन्य लाई सिद्धु छि ॥ ८ ॥ उप
कार गरि शत्रु लाई हात ली अर्क शत्रु को काम गरी दिनु पाउमा विद्या का कांठा कांटे
लेहि कि फालनु तस्ते ॥ ९ ॥

नाम छि इ परे विद्या दिद्या छि इ परस्य च ॥ गृहे कुर्म इवांगानि परभा
वंच लक्षये ॥ ७ ॥ मन सा चिंतितं कार्य वचमान प्रकाशयेत् ॥ मैत्र लक्ष
णगुहात्मा कार्य सिद्धिश्च जायते ॥ ८ ॥ उपकार गृहीतेन शत्रुरणा
शत्रुमुद्धरेत् ॥ पादलग्ने करे स्थेन कंठ केने वकीटकम् ॥ ९ ॥ वदद
मित्रैस्त्वेन पावत्काल विपर्यय ॥ तथेच मार्गते काले भिद्यात् घटमिवा

आफु ना विपति माहं का धमाहं लि कनपति शत्रु को काम गरि दिनु काज काम ला
ई च होउनु जव काल आई प्राप्ति भयो तव भरि गाग्रो पात को छुगमा आफु लि फो
न्याई गर्नु ॥ १० ॥

बानर
॥ १६ ॥

हेजिभ्रातितोपिरोनिकोमादछस मधुरक्यानखादेनसु नतिकोतबोलमिठोकुरेवो
लहेकल्याणिलोकसबेमधुरेनिकोमादछनु ॥ ११ ॥ जिभ्राकाटुप्यामाहांतक्ष्मी
वसछिनु मित्रपतिभाइपतिमरणपतिनिश्चयेजिभ्रामाछनु ॥ १२ ॥

हेजिहेकुकुक्नेहेमधुरकिन्नाभाषसे ॥ मधुरवदकल्याणिलोको
हिमधुरप्रिया ॥ ११ ॥ जिह्यायेवसतेलक्ष्मी जिह्यायेमित्रवांधवा
जिह्यायेबंधनंचाजिजिह्यायेमरणक्रवा ॥ १२ ॥ प्रियवाक्यप्रदा
नेनसर्वतुष्यतिजंतवा ॥ तस्मात्तदेववक्तव्यं वचनंकिंदरिद्रता ॥ १३ ॥
अग्निदोगरदध्वैवशस्त्रपाणिर्द्रतापह ॥ क्षेपदारपहारीचषडनेआ

नमामिना ॥ १४ ॥

मिठोकुरेवोल्यापछिसेवेप्रसन्नकुछनु तस्कारणपियाणेलाग्याकुरेवोलनु
वचनमाहाक्यातदरिद्रकुनु ॥ १३ ॥ धरमाहाआगोसलकाइदिन्याविषय
वाउन्माहातलेहतिपातिकाटुनुआटन्याधनहर्न्यास्वाधिहर्न्यावेतहर्न्या
एतिलाईआतताईभंनु ॥ १४ ॥

॥ १६ ॥

वेदपारगयापनि आकुलाईमान आउत्या आतताई लाईमानु तेसले वृक्ष हत्या
लागे देना ॥ १५ ॥ सत्यधर्ममातपरभेकन राजाको पालना गर्नु शत्रुको सत्य लाई जि
तिकन प्रजालाई धर्मले पालना गर्नु ॥ १६ ॥

आततायिन मायात मपि वेदांत पारग ॥ जिवांसंत जिवांसीयान्ते तेन
वृक्षहा भवेत् ॥ १५ ॥ गच्छं च पालयेन्नित्यं सत्यधर्मपरायणा ॥ तिर्जि
त्यपरसेन्याति प्रजाधर्मोपापलयेत् ॥ १६ ॥ पुष्पं पुष्पं विचिनुया
न्मूलच्छेदने कारयेत् ॥ मालाकार इवांगानि यथा यानाति सारतम ॥
॥ १७ ॥ अरि मित्रमुदासीन मध्यस्थ स्थवीर गुण ॥ यो न बुध्यति मदात्मा स

फल फलतिपिकन जरे न ठरे वेली न्या पारिजसोमालिले वगे चामा विचार गर्छनु
तस्ते राजालेपनि प्रजालाई दुखन दी कल कर लाउनु ॥ १७ ॥ यो शत्रु यो मित्र यो उदा
सी यो मध्यम यो बुढो यो गुह्य भनि बुझ्दै तयो घटिया बुद्धि भयाको नाशि छु ॥ १८ ॥

सर्वजनशयति ॥ १८ ॥

यान क

॥ १७ ॥

आफ्रा आमद भई अर्थात् लोखर्च गन्या विना अर्थ कल हगन्या रोग लाग्या मास वे
थोक धाम्या एसा मासि सचाडे ना सिद्ध ॥ १८ ॥ काल को नुह को मित्र हनु को न दे
श हो क्या खर्च हनु क्या आमद हनु म को न हनु मेरो शक्ति कनि को हनु यो वार वार चिन
ना गदै रहनु ॥ २० ॥ ॥ ॥

अनाय व्यय कर्ता च अनर्थ कल ह प्रिय ॥ आतुरे सर्व भक्षी च नर
शीघ्रं विनश्यति ॥ १९ ॥ क काल काणि मित्राणि को देश को व्य
याग मे ॥ कश्चा ह का च मे शक्ति रिति चित्य मुहुर्मुहुः ॥ २० ॥ सिंह देक
व का देकं शिक्षे च त्वारि क कुरात ॥ वायसा त्वं व शिक्षे च व दधुत स्त्री
णिगर्द भात ॥ २१ ॥ अमृत काय मिल्य वायो नर कर्तु मिच्छेति ॥ सवार
मेधुत काय सिंह देक विधियते ॥ २२ ॥

सिंह दे वि एक गुण व कश्चा दे वि एक गुण क खुरा दे वि ४ गुण को वा दे वि पाच गु
ण क क दे वि छ गुण एति सिकु न भेछ ॥ २१ ॥ दुलोकाम भयाप निसानु काम भयाप
निसवे कार्य तत्पर भेक न सिंह को हर्षा इगनु ॥ २२ ॥

॥ १७ ॥

सवद्रिपलाईकन वक्रध्वारे परिआयाकाबेला माकार्यगर्नु वक्रध्वामंग एकगुण
लिन ॥ २३ ॥ विहानेउठ्याभुद्रगन्याबंभुवर्गलाईवाडिघानु स्वास्तिलाइवलेसित
भोगगर्नु एतिचारकुरेकुरेदेविसिकुनु गुणभयाकोकसेकोपनि लिन ॥ २४ ॥

इडियागितुसंयम्यवकवत्परिडितोनर ॥ कार्यकालोपपन्नानिस
वकार्याणिसाधयेत् ॥ २३ ॥ प्रागस्थानंचयुद्धंचसंठिभागेचवंधुषः
स्त्रियमाक्रम्यभुंजितशिक्षचचारककुरात् ॥ २४ ॥ गूढमेथुनधू
र्तचिंकालेचालयसंग्रह ॥ अत्रमादमविश्वासंपंचशिक्षेचवायसात्
॥ २५ ॥ वहावीचाल्यसंतुष्टसुनिद्रशीघ्रचेतना ॥ स्वामिभक्तश्च
भूरश्चखडेतेश्वानतोगुणा ॥ २६ ॥

गोप्यगतिमेथुनगर्नुधूर्तकुनु वेला माहं घरलाउनु नमातनु विश्वासकेसेकोन
मानु एतिपांचथोककोवादेवीसिकुनु ॥ २५ ॥ पायाठरेखानुनपायाथोरैलेसुनु
हृकुत्याथोरैनिशकुन्याचडेचेतन्यकुन्या स्वामिकाभक्तिराखनु भूरोपनीकुनु एति
छथोकककुरेदेविसिकुनु ॥ २६ ॥

वानक

॥ १८ ॥

नविशा इमारिवोकन्या चिसोतातोपनिनमान्या सर्वदासंतोषेमान्या इतीनगदा
हाकासिकनु ॥ २७ ॥ इजोविशगणभन्याकाजोचतुरतिछन् सोमनुष्यसवेशत्रु
कनजितिसवेलेजितनुपनिजिछ ॥ २८ ॥

आविश्रांतवहेझारशीतोष्णचनविंदति संतुष्टं चभवोन्नेत्यंवीणि
शिक्षेतगर्दभात ॥ २९ ॥ विशलेतेगुणाप्रोक्तयस्तु कुर्याद्विचक्ष
णा ॥ सजेत्यतिरिपुत्सर्वानजेयश्चभविष्यति ॥ २८ ॥ तुयंशतवय
पंचविरोधचपरस्परं ॥ परैराक्रम्यमानेतुवयपचोत्तरशतं ॥ २९ ॥
हित्वाभित्वाचर्त्तानि कृत्वावैरिमशंतका ॥ ज्ञातवै समयतियप
रपास्तसा ३० ॥

॥ १८ ॥

तिमिशमोहो हामिपांचछो परस्परतिग्राहाम्रावेरद्वतपनिअकोशत्रुआइलाग्दा
तिमिहामिपांचअधिकछोभनियुधिष्टिरलेदुयेधिमदेउंभन्या ॥ २९ ॥ आऊछु
टिईछमर्मकोकरोलेकाटिपरस्परवेरगरिनमित्यापनिदाजुभाईफेरमित्छनृजो
शउहोउशत्रुहैछआऊऊदेन ॥ ३० ॥

मूर्खनकुन्यामानिस्तरिर्थाचिन्ननाशगरिपरस्परअपकारलेमात्रसाधुजनकोविग्रह
होला ॥ ३१ ॥ पेरखवरा राउकोडुईभयाकोभैरुंजपछिसमुद्रमाहोसाधनागरिहिडे
दुआफुशत्रुजातीनरभैरुंजकोनाशभयेछननैसैशत्रुमित्रवहुनुछ ॥ ३२ ॥

अमूर्खीयोमनुष्याणांमन्युसंतप्रचेतसां ॥ परस्परापकारेणपुसांभवति
विग्रहः ॥ ३१ ॥ एकोदराष्टथग्रीवायेचरंतिमहार्णवे ॥ असाध्यतावि
नश्यतिभैरुंजइवपक्षिणा ॥ ३२ ॥ व्यसनेसतिकुर्वीतयेनकेनापिसं
हति ॥ सक्षवातरागोपछेपुगदाशरथिर्यथा ॥ ३३ ॥ दुस्तरसागरंती
रांसमग्रवानरंचला ॥ अभूतपूर्वगमेणसेतुबंधश्चसागरे ॥ ३४ ॥

आपदामहो कसेछेउंभयापनिभजनागरि तारनागर्ज श्रीगमलेपथुगणकोपछर
समाईमित्रगरिआफ्राआपदातारनागछन ॥ ३३ ॥ छेरैवरोलभैआयासानुभया
पनिहलुकगजछैन वानरागणमात्रलेसमुद्रमासेतुबंधनागछन श्रीगमले ॥ ३४ ॥

चार्क
॥ १९ ॥

मनुष्यको ज्वर भन्ना को चिन्ता हो घोजको ज्वर मैथुन हो स्त्रीजनको ज्वर पुरुषन भया
को कपराको ज्वर घास हो ॥ ३५ ॥ मानि मलाई एको हरि हिडू नु धु न हिं जा या घो
डा छु म मैथुन न ग या स्त्री वृद्धा घोजको मैथुन वृद्धा हो ॥ ३६ ॥

चित्रा ज्वर मनुष्याणां अन्धानां मैथुने ज्वरं ॥ असौ भाग्यं च वस्त्रीणां व
स्त्राणां मातपो ज्वरं ॥ ३५ ॥ अध्वजरा मनुष्याणां मनश्चावजिनं जरा
॥ अमैथुनं जरा स्त्रीणां मश्चानां मैथुनं जरा ॥ ३६ ॥ कष्टा वृत्ति पराधि
ना कष्टं चासौ निराश्रयः ॥ भूतपूर्वार्थसमुक्तं सर्वकष्टं दृष्टिम् ॥ ३७ ॥
अधितो व्याधितो मूर्खः प्रवासि परसेवकः जीवतोऽपि मृता पंचपंचैतेऽ
खभागिताः ॥ ३८ ॥

अर्काका अधीन भया का जिउ नु वडो कठिन कसे को आश्रम गरि वास वस नु पनिकठी
नहु छ अधिधनी पछि कंगाल भया को पनिकठिन सबै भेदा ॥ ३७ ॥ सर्वदा माग न्या
१ गोगि २ मूर्ख ३ विदेशी ४ चाकहि ५ इपांच सर्वदा को जिउं दा छत पनि मया बरो वरो अ
भागि भनुः ॥ ३८ ॥

॥ १९ ॥

आर्का को धरनिमजो है नृनिमन बोलाई रवी है नृयति गन्या मानि सुईदु समनका
पनिहलुक संतु ॥ ३६ ॥ अर्का को अन्न वस्त्र अर्का को चर्मा मा चहु नु पर खिगमन
गन्या अर्का को घर मा वस नु ईदु लयनया पानि ले क्षी घृति ऊ है नृ ॥ ४० ॥

योय वनिम मायाति धृ कं चापि दिने दिने ॥ सत बल दुता यातियदि
सक समोनर ॥ ३६ ॥ परान्न परवस्त्र च पर पान पर खिय ॥ पर
स्पच गृहे वा सो शक्र स्थापि क्रिय हरत ॥ ४० ॥ अशो व्योति द्विने
विद्या नशो च पुत्रवानर ॥ अशो व्यो विधवानारि पुत्र पौत्र प्रतिष्ठि
ता ॥ ४१ ॥ विभवे सति पुज्यते न शरिराति देहिता ॥ चाडलोपि
नर श्रेष्ठो यस्यास्त्रि विपुलं घना ॥ ४२ ॥ ॥

धन भया को है नृ न पानि पाडि छ ना शो कन गर्तु पुत्र भया को मनु व्य को धर
हैन न पानि शो कन गर्तु छे राणाति भया को विधवा भया कि छत पानि शो कन गर्तु ॥ ४३ ॥
धन भया को मनु व्य को सभ मान गर्तु मनु व्य को शरिर को मान को हि गर्तु न
चाडल छत पानि न स्का धरा वडत छ सोहि तु लो ॥ ४२ ॥ ॥

धर्मभयाकोपनिधनैलेइछ धनलेसभकोप्रतिष्ठाभारिइछ जोधनिछनृजिउरा
 उनैकनमंनुएसलोकमाजोतिधनीछ गिउराधतपनिमन्येवरोवरइछ ॥ ४३ ॥
 वडुतसंपत्तिभयाउरवपाइछ भयइछ अतिउचपर्वतगयावत्तपातइछ अलजोभया
 पछितिश्रयवस्थ ॥ ४४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जानक
 ॥ २० ॥

धनमाडुपरधर्मधनेसर्वप्रतिष्ठित ॥ निवतिधनीनोलोकेभृताये
 त्वधनानरा ॥ ४३ ॥ अतिसंपदमापनेभेतव्यमतताडुयम् ॥ अ
 तुभिशिखराहृत् सत्यवत्तेरापातित ॥ ४४ ॥ कोभक्षोभक्षको
 नित्यकमुखानिचरोगिरा ॥ यस्यभाय्यीत्वसंतु धाक चेतस्यसुखं
 गृहे ॥ ४५ ॥ सुभिक्षकवतेनित्यसुखंनित्यमरोगिरा ॥ भार्याभ
 तुर्वशा यस्यतस्यनित्योत्सवगृहे ॥ ४६ ॥ ॥ ॥

॥ २० ॥

सर्वेथोककान्यायोधान्यानखान्याविचारडुरैनसवरारोगिभयाकोलाइसुखइ
 देननस्कीस्त्रिअसंतोविद्धतस्काधरमाकेहेसुखवडेन ॥ ४५ ॥ एतिगन्यामनु
 व्यकनमहासुभीक्षइतिरोगिकनमहासुखेइजस्कीस्त्रीआफनावशछतका
 घरनित्यउत्सवइसुखपतितेसताईछ ॥ ४६ ॥

पर इका वशगर्न सब भंदा दुख हो आक्रावस सेवे भया कसे को अक शन भया का वरोव
र सुख छैन सुख दुख को सक्षेप कारण एति भनी जानु ॥ ४७ ॥ सुख भया पछि दु
ख भया पछि सुख दुख तत्कारण सुख दुख रथ का चक्रि छु मूछन ॥ ४८ ॥

सर्व पर वश दुख सर्व मात्म वश सुख ॥ एत द्विधा समासेन लक्षण सु
ख दुखयो ॥ ४७ ॥ सुख स्थानंतर दुख दुख स्थानंतर सुख ॥ सुख दुख
मनुष्याणां चक्रवर्त्य परिवर्तते ॥ ४८ ॥ बहुभिर्मुखं संचाते रज्यो न्य
पशु वृत्तिभिः ॥ छादयति गुणान्सर्वान्मेघैरिव दिवाकर ॥ ४९ ॥ असता
सहसं गेन को न यात्यधमा गतिम् ॥ पयोपिशोडिनी हस्ते मथ्यमि त्य

बहुते मुख को समुदाय भया पशु का ह्वे बुद्धिगन्या काले भला मनुष्य को गुण मे घेले सू
र्य लाई ठाक्य है ठाक ॥ ४९ ॥ साधु असाधु को संग भया घटिया बोला उछ मद
वेच न्याले दुदत्तायापनि मेदे होला भनि छन ॥ ५० ॥

श्री विद्यमते ॥ ५० ॥

जान क
॥२९॥

२९

असाधुसितसंसर्गभया साधुपनिअसाधुद्वेष्ट अंधारोभयापछि वरोवरवांरोपनि
इचरवालदेखिछ ॥ ५१ ॥ उत्तमसंगगयाद्यदियापनिउत्तमद्वेष्ट फलसितउ
न्याकोनरापनिशिरमालाइछ ॥ ५२ ॥ ॥ ॥ ॥

असत्तं परकदोषेण अधमायांति साधव ॥ मार्गस्तिमिरदोषेणस
मोपि विषमायते ॥ ५१ ॥ उत्तमे सहसंगेन कोनयाति समुभा
ति ॥ मूर्खान्तरात्रिधायति ग्रथिते कुसुमे सह ॥ ५२ ॥ किं करिष्य
तिसंयक्तस्वभावोदरतिक्रम ॥ पश्यामुफलमध्यश्च करवायेता
स्ततागत ॥ ५३ ॥ शक्तिशतभारेण मध्येतिव प्रतिष्ठितं ॥ मधुक्षी
रसमाष्टतिनिम्ब किं मधुरायते ॥ ५४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥२९॥

भलासितसंगतभयापनि स्वभावछुट्तेन आमुकाफलभिन्नकोकोयोआमिलो
गुलियोहुंदेन ॥ ५३ ॥ सखरशयभारिहालिकननीमकाफलरोप्यापनिमह
हुदसदाछिकंदे रखापनिनिमगुलीयोहुंदेन ॥ ५४ ॥

२९

पुस्तकमा लेख्याका विद्या पराङ्को हात दिया को धन काम परि आया का बेला मा तयो
विद्यापति धनपति कामपदेन ॥ ५५ ॥ ताजभयाको मित्र प्रीति नभयाको भाइरूपा
कामप्राप्तियला माग्याको न पाया जस्तो हो ॥ ५६ ॥

पुस्तके सुचपा विद्या परहेते युयुत्सुन ॥ काश्चि काले च संप्राप्तेन सा
विद्या नतद्वन ॥ ५५ ॥ इरस्थानि च मित्राणि निस्त्रिहाश्चैव बांध
वा ॥ प्रयोजनं किं कर्तव्यमर्थिने निष्फलानि च ॥ ५६ ॥ अटव्या
कुमनुष्याणि इरस्थाश्चैव बांधवा ॥ कोना चालेरव्यभूता च यका
लेनोपतिष्ठति ॥ ५७ ॥ प्रज्ञावचनहीनश्च कर्महीनश्च यो नर ॥
निरर्थश्चैतमायस्य भस्मन्याकुतयो यथा ॥ ५८ ॥

वनमाको फल ताजभयाको बंधुवर्ग मित्रा मा लेख्याकी स्त्री एतिका ममा आ
उंदे नर ॥ ५७ ॥ बुद्धिलेहीनभयाको कर्मलेहीनभयाको मनुष्य जिठनु व्यर्थ
छ वरानि माहा आकुति हास्याजस्तो हो ॥ ५८ ॥

चाक

॥ २२ ॥

धाको को युद्ध अधिको आहु प्रात काल महा भयाको मेघ विपुल वको कलह क्षरामा
अपनि रहेन ॥ ५८ ॥ कपनि मानि मूढों को सेवा डरले हत पतले एति गन्याको गे
गी मनुष्य ले स्त्री संभोग गन्याको दोष ले युक्त भयाको ब्राह्मण ले पद्माको वेद ते व्यल ॥ ६० ॥

छाग युद्ध अविश्रादु प्रभाति मेघ उन्मर ॥ दंपत्यो काल हृष्टे वक्षरामात्रं
नति छति ॥ ५९ ॥ निष्फला कपण सेवानिष्फला रति चानुरे ॥ दोष शं
युक्त शीलस्य कृतिर्विप्रस्य निष्फला ॥ ६० ॥ अहिरण्यमदासी कैटव
गेहस वज्रितम् ॥ प्रतिकूल कलत्र च नरक स्या परे विधि ॥ ६१ ॥ वरयकु
लजां प्राशो विरुपामपि कन्यकाम् ॥ सुमपिणी न नीचस्य वै बाह्यं सदृशं

दोल धन भयाको दास दासी न भयाको गाइको दूदन भयाको भन्नामा हां विवृल्यारोग
न्यास्त्री एति नरक भंनु तं हि हो ॥ ६१ ॥ बडाले बडा कुल की कन्या तरा मी भयापनि वि
वाह गर्नु निचको ए मी छत पति विवाह न गर्नु वरो वर कुल मा हां गर्नु ॥ ६२ ॥

॥ २२ ॥

विषवाटपनि अमृतमिहिकिलिनु अपवित्र देखिपनि सुवर्णतिनु निचमनु व्यदेवि
पनि उतमविद्याभयातिनु स्त्रीरत्न घटिया कुल देखितिनु ॥ ६३ ॥ कस्का कुलमा
दोषछेन कस्तार्ह रोगभयाकोछेन वेसन्कश्चे पायाकोछेन लक्ष्मीसदा कस्काहुँछु ॥ ६४ ॥

विषादप्यमृतं ग्राह्यमनेध्यादपि कांचनं ॥ निचादप्युन्नमां विद्यास्त्री
रत्नकुसुलादपि ॥ ६३ ॥ कस्य दोषं कुलेनातिव्याधिना को न पीड्यते
केन न व्यसनं प्राप्तं कस्य त्रीश्वतिरंतरं ॥ ६४ ॥ दोषोप्यस्ति गुणोप्य
स्ति निर्गुणोऽपि जंतुषु ॥ सुकुमारस्य पद्मस्य नालो भवति कर्कशा ॥ ६५ ॥
अमृतं शिशिरैर्वह्नि अमृतं क्षीरभोजनम् ॥ अमृतं गुणवति भाष्यं ह्य
मृतं बालवाधितं ॥ ६६ ॥

दोषगुणतभयाको प्राणी छेन वहुत कोमल कमल छुत पनि डाठमा हां कांछाले
यत्नोछु ॥ ६५ ॥ शिशिरऋतुमा अग्नि अमृत क्षीरभोजन पनि अमृत गुणवती स्त्री
पनि अमृत बालवको बो लि पनि अमृत तुल्य हो ॥ ६६ ॥

॥ नक ॥
॥ २३ ॥

प्राकृतसंस्कृतवाणी अपराधमाफगर्भाप्रभु प्रियवोलन्यास्त्री पियारेलाग्याव
चन एति दुर्धर्माकुंछ ॥ ६७ ॥ नदी विषयमागगास्त्री माहापतिवता मातिसूमा
रजा देशमाहांमिल दोशेष्ट भनु ॥ ६८ ॥

दुर्धर्माकुतावाणी दुर्धर्माकुक्षमीप्रभु ॥ दुर्धर्माचसुहृद्वारी दुर्धर्मा
भवंचतं प्रियम् ॥ ६९ ॥ नदीनां जाह विभेद्योतारीणां च पतिवता ॥
मनुष्याणां न पत्राकुं देशानां यत्र निवर्ति ॥ ६८ ॥ पुत्रयोत्र समाकीर्ण
दासी दास समाकुल ॥ भाषा विरहितं पुसां यथारण्यतथा गृहम् ॥ ६९ ॥
सर्वेषामेव रत्नानां स्त्रिरन्तर्हि अनुत्तम ॥ तस्मात्तदर्थं निरता स या तपसा

होराताति सपैप्रकारत्ने दासदासिले युक्त भयाकोचरुतपनिस्त्रिद्विहित हृत अरुपव
नजस्तो दुर्धर्मा ॥ ६९ ॥ सवैल न दासीरत्न उत मतस्त्रिमितस्त्री न भया धनलेक्या प्र
योतत ॥ ७० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ २३ ॥

घटियास्त्रिमया कुटुवनाशङ्क कुपवले कुल कुमत्रीलेराजा चोरले देश नाशी ॥ ७१ ॥
स्त्रिको देखहजार रङ्ग गुण नन्याति न पुत्र जन्मा इति गृह को व्यवहार विचार गर्नुपति
मर्दा साथ जानु ॥ ७२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कुस्त्रि हंतिकुटु वानिकु पुत्रो हन्य ते कुला ॥ कुमत्री हन्यते राजा रा ॥
चोरैरा हन्यते ॥ ७१ ॥ स्त्रिनां दोष सहस्राणि गुणास्त्रिणि मही
यते ॥ गृहा चार सुतोत्पत्तिर्मरुतोपतिना सह ॥ ७२ ॥ कवय कि
नपश्यति किन मक्षति वायसा ॥ प्रमदा किं न कुर्वति किं न जल्पति मय
पा ॥ ७३ ॥ पुत्र प्रयोजना भार्या पुत्रा पिंड प्रयोजना ॥ हित प्रयोज
नं निव सर्वमात्म प्रयोजनं ॥ ७४ ॥ ॥ ॥ ॥

क विहुरुले क्या देखै ॥ काक क्या थो का खां दैन स्त्रीले क्या गर्दन सुरापान गर्न्याले क्या
बकै दैन ॥ ७३ ॥ पुत्र का खातिर स्त्री चाहिं छ पिंड का खातिर पुत्र चाहिं छ हित कुरा
देवा उलाभति मित्र चाहिं छ सर्व प्रकार आफैति मित्र चाहिं छ ॥ ७४ ॥ ॥ ॥

नवक
॥ २४ ॥

समुद्रलेखीवेष्टितछपविललेघरवेष्टितकराजालेदेशवेष्टितछतचरित्र
लेस्वास्तीवेष्टितछत॥ ७५ ॥ घरलेपनिरक्षाकुदेनदाज्यभाईपनिरक्षा
गर्नसत्तेनवाधिकनपनिरक्षाकुदेनस्त्रीकावठियाशीललेमात्ररक्षाकुछा॥ ७६ ॥
नदिलेतीर्यसाउंछनस्त्रीलेकुलसमाउछननदीरनारीस्वछन्दगतिछन॥ ७७ ॥

समुद्रावरणाभूमिः प्राकारावरणागृहा॥ नरेन्द्रावरणादेशाश्वरि
त्रावरणास्त्रिय॥ ७५ ॥ नगृहाणिनवासांसिनप्राकारश्चरक्षका॥
तबंधुनेवबंधोवास्वशीलाहिकुलस्त्रिया॥ ७६ ॥ नदिपातयते
कुलनारीपातयतेकुल॥ नारीणांचनदीनांवस्वछंदललितागतिः
॥ ७७ ॥ लतापार्श्वस्थितं दृक्षभृत्यं पार्श्वस्थितं नृप॥ पार्श्वस्थं प
रुषं यो विद्वेद्व्यंतिनसंशयः॥ ७८ ॥

॥ २४ ॥

लहरालेआक्रान्तीककादृक्षसमाउछराजालेनजीककासेवकपत्ताउछन
स्त्रीलेपतिनजीककोपरुषतुल्याउंछनएस्मासन्देहछेन॥ ७८ ॥

जस्का मुखमा सरस्वतिरूपवति पतिपुता त्विह दानगर्तु सामथ्र्यं लक्ष्मिमेक
नितियासफलतसैला इभनु ॥ ६५ ॥ जस्मनु अ धर्म अर्थ काम मोक्ष एके
थोक पति छैन तत्पो मनु अप को चाक कागला माझुद रु दिया तसो दूद दि न्या हो
इतत सर्थ व्यर्थ नूनु हो ॥ ६६ ॥ ॥ ॥ ॥

वाचा सरस्वतियस्य भार्यारूपवति सति ॥ लक्ष्मि त्यागवती यस्य
सफलतं तस्य जिवितम् ॥ ६५ ॥ धर्मार्थ काम मोक्षारण्यस्य को
पित विद्यते ॥ अजागलस्तनस्ये वनिरर्थतस्य जीवितम् ॥ ६६ ॥
सत्य धर्मवीहिनस्य दिनयाति च विक्रिया ॥ सत्तो हकार भस्त्रेव
मय चैव प्रतीयति ॥ ६७ ॥ शत्रोरपि गुरा वा चादाया वा चा
गुरो रति ॥ युक्ते युक्ते वचो गालन वा च गुरु गोर वात् ॥ ६८ ॥

सत्य धर्महीन भेदिन व्यति तङ्क नूतस्को जिया को स्वास मात्र आया को लोह का
रको रवलासि तसो हो ॥ ६७ ॥ शत्रु को पति गुरा भनु गुरु को पति दोष भनु गुरु
लाइ पनि भारित्व न गुरु सत्य वादि कुनु ॥ ६८ ॥ ॥ ॥

प्राणकृष्टवारजानु लाग्यापनिनगर्न्याकामनगर्नगर्न्याकामभवश्पगर्नुतसर्धयथो
 र्धगर्न ॥ ६६ ॥ दुर्जनसगभया सज्जनपनिनासिद्धजस्तोतिमित्तजत्नहितो
 लेधमिली दुष्टतस्तैसगदोषही ॥ १०० ॥ इति चानन्दे सारसंग्रहे द्वितीयः
 सर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

अकर्तृव्यन्नकर्तृव्यप्राणो कंठगतैरपि ॥ कर्तृव्यमेव कर्तृव्यप्राणो
कंठगतैरपि ॥ ६६ ॥ दुर्जनैः सह सगेन सुजनोऽपि विनश्यति ॥
प्रसन्नजलमिच्छाकुक्कुटं मे कलुषि यते ॥ १०० ॥ काले चरि
पुराणसंधी काले च मित्रसंग्रहः ॥ कार्यकारणमाश्रित्य काल
क्षपति पंडितः ॥ १ ॥ कालपचति भूतानि कालसंहरते पुत्राः ॥
कालमुपैष्यन्ता गतिं कालो हि दुरतिक्रमः ॥ २ ॥

दिनसमयकाफललेशत्रुद्ध समयेकाफललेमिवैदुद्धानिजनलेस
मयेहरिकाजगर्त ॥ १ ॥ समयलेसधिगेराउनुसमयलेसहारणहसम
येलेजगाउसवैथोकगन्यासमयही ॥ २ ॥ ॥ ॥

कालमाहाविजगर्तु कालैले बीज उ प्र छ कालैले फल फल उ प्र छ कालैले मृष्टि
गरुड फरि कालैले संहार ग छ तसर्थ सिवे चहि काल उ लो हो ॥ ३ ॥ आकाश
दिशा भूमि पानि चंद्र सूर्य अग्नि वायु एति संवे कालैले संहार ग छ तसर्थ काल बडो हो ॥ ४ ॥

कालात्प्रेरते विजं फलं कालात्प्रवर्तते ॥ कालात्प्रवर्तते सृष्टि पुन कालो
पिसहरेत् ॥ ३ ॥ खंदिशो भूमिराप चंद्रा कानिल मातृ ॥ सर्व संह
रते काल सत्त्वा को लोम हनत् ॥ ४ ॥ किं करिष्यति वक्ता च श्रोता यत्र
न विद्यते न ग्रक्षणा कग्रामे रजक किं करिष्यति ॥ ५ ॥ कदली वनम
ध्यस्थो वह्निर्मंद पराक्रम ॥ अविवेकी जनस्थाने गुणवान् किं करिष्यति ॥ ६ ॥

संन्यास भया कागड उं बोलन्या को क्या लागु नगर ह्या कागड मां हा धोवी या को क्या
लागु ॥ ५ ॥ केरा का बोट मा हा आग को पराक्रम छैन विवेक न भया कागड मा गुणि
जन को केहि शि पु छैन ॥ ६ ॥

वार्क

॥ २८ ॥

एतिगर्तु एतिगर्तु भन्या काम र्यादा साधुजनसंगकुंछ प्रलयकालमाहांसमुद्रले
मर्यादानाघिजांछ साधुजनले प्रलयकालमाहांसपतिमर्यादाछेउदेने ॥ ७ ॥ प्रल
यकालमाहांसुमेरुपतिचल्छ समुद्रलेपतिमर्यादानाघछ साधुजनले डुरवसुरवमा
पतिकुमागचिदेन ॥ ८ ॥

प्रलयेभिन्नमर्यादाभवंतिकिलसागर ॥ सागरभेदमिद्धतिप्रलयेदि
नसाधव ॥ ७ ॥ मेरुश्चलतिकल्यांतेमर्यादासागरस्यच ॥ प्रतिपन्नम
हासत्वात्तचलंतिकदाचन ॥ ८ ॥ विद्यतेस्त्रीषुचापल्यंविद्यतेब्राह्म
णेनप ॥ पाहृष्यंविद्यतेनीचेदयासाधुषुविद्यते ॥ ९ ॥ साधुसन्मानमो
त्रेणभवन्ति देहविक्रयी ॥ उपकारशतेनापि दुर्जनकेन गृह्यते ॥ १० ॥

स्त्रीदेउंचंचलताकुंछ ब्राह्मणछेउतपकुंछ नीचाजनछेउ छुद्राजिकुंछ साधुजनछेउ
दयाधर्मकुंछ ॥ ९ ॥ साधुजनलाईसगगदीदेहविकेएपनिआफ्राकुंछ शयगणाला
याकोछतपनिआफ्राकुंछ शयगणालायाकोछतपनिदुर्जनआफ्राकुंछदेन ॥ १० ॥

॥ २८ ॥

सज्जनभन्या शास्त्रकाकुरालेव हिंस्व मूर्खलाइ शास्त्रकाकुरालेव न्याहेन प्रत्यक्ष
दीपवाली रायनुर आंवाहुन्यासवे देवदू कारणलेके हि देवै न तसे हो ॥ ११ ॥
सज्जनभन्याका बाहिर वस्त्रोभिन्नमसिना न रिबलजस्ता दुर्जनभन्या बाहिरमसि
नाभिन्नरवसाचमरजस्ता ॥ १२ ॥

बुधबोधातिशास्त्राणि नाबुध शास्त्रबोधक ॥ प्रत्यक्षेपि कृते दी
पेचक्ष हि मोनपश्यति ॥ ११ ॥ मारिकेरफलाकार दृश्यते केपि
सज्जना ॥ अन्येपि वदराकार बाहिरैव मनोरमा ॥ १२ ॥ चंदनशी
तलचंद चंदने ननु चंदमा ॥ चंद चंदनयोर्मध्यमाधुसौपकशीत
लः ॥ १३ ॥ अधमाधुनमिच्छति त्रीतिमिच्छति मध्यमा ॥ उन्नमा मा
नमिच्छति मानं हि महता धनं ॥ १४ ॥

शितलभन्याको श्रीखंडर चंदमाहुनु श्रीखंडचंदमाभंदासाधुजनको शंगमशी
तलहो ॥ १३ ॥ तिचजनधनको इक्ष्वागर्ध मध्यमजन त्रीतिको इक्ष्वागर्ध साधुजन
मानको इक्ष्वागर्ध मानभन्याको साधुजनको धनहुनु ॥ १४ ॥

नौक

॥ २९ ॥

हिंसा ले धामा रुचा उं छ रजाले धन रुचा उं छ नीचले कल रुचा उं छ सज्जन ले
शांति रुचा उं छ ॥ १५ ॥ अधम जन धन इच्छा गर्छ कन्या हुन रूप इच्छा गर्छ न सा
निह रुगेत्र का कुल इच्छा गर्छ तपस्वी हुन स्वर्ग का इच्छा गर्छ ॥ १६ ॥

मलिका व्रण मिछति धन मिछति पाथिवा ॥ नीचा कलह मिछति
शांति मिछति साधव ॥ १५ ॥ इतरे चार्थ मिछति रूप मिछति रा
रिका ॥ सातम कुल मिछति स्वर्ग मिछति तापसा ॥ १६ ॥ अतिले
शेनय दुष्य अतिलोभेन ये सुरव ॥ परपीडा च या वृत्तिर्नेव साधु
बुवि द्यते ॥ १७ ॥ अशक्यं तारमेत्यान अकार्यं तेव कारयेत् ॥
स्वल्पकार्यं न कथं धिनिष्फलं तेव सेवयेत् ॥ १८ ॥

॥ २९ ॥

बडा कष्ट ले धन कमाउउ लोभ ले सुरव गर्नु परलाई पीडा गर्नु एतिथोक सज्ज
न धाई कुदेन ॥ १७ ॥ सज्जन न सकन्या काज को आरंभ गर्दै न लोभ देखाया
पनि कुकर्म गर्दै न निष्काम पति गर्दै न निष्फल कुन्य ठाउँ सेवा गर्दै न
॥ १८ ॥

सर्वे पर्वतमा मानिक्य कुदेन सर्वे हातिका मस्तकमाहां मोति कुदेन सर्वे धानमज्जनकु
देन नृ सर्वे वनमा श्रीखंड कुदेन ॥ १९ ॥ परया का काजमाहां युक्ति लाउनु आकु
कार्यमाचाडे सिद्धगर्न मित्रका काजमाहां तिष्ठये गर्न राजाको कार्यमाहां वललाउने
॥ २० ॥

शेले शेलेन मानिक्य मोक्तिकं नगजे गजे ॥ साधवो नहि सर्वत्र चंदनं न
वने वने ॥ १९ ॥ परका धर्म पुत्रतामा स्वका धर्म प्रसाधक ॥ सुहृत्ता
धर्म पुत्रिर्हति राजकार्येषु विक्रम ॥ २० ॥ जलले रेवति चाना यत्कृतं त
न दृश्यते ॥ अचले न च साधुना शिलाले रेवति दृष्टि ॥ २१ ॥ महता माय
द संति महता मेव संपद ॥ इतरेषु मनुष्येषु तापदो नैव शंपद ॥ २२ ॥

नीचलाई कति उपकार गया पनि देखेने न पानिमा पानिले लेख्या जलो साधुजन
लाई एक वेर उपकार गया को दुगमा लेख्या जलो जन्म मेरि देन ॥ २१ ॥ वडामनु
ष्यलाई सुख पनि ठेर दुख पनि ठेर इतर छुवा लाई सुख पनि थोरै दुख पनि
थोरै ॥ २२ ॥

यानक
॥ ३० ॥

आक को पुलचगया महादेव संतुष्ट इच्छवस्त्र चठया चंद्रमा संतुष्ट इच्छमन मनै स्मर
रागया विष्णु संतुष्ट इच्छवडा प्रहृषलो र्हात जोरिन मस्कार गदा संतुष्ट इच्छ ॥ २३ ॥
लेखन्या पुरुषा पंडित इतिले लेखना पहना को अभ्यास मात्र गद्द ह काम बुद्धि न नृति न
हत्ता इव सनी भनु मुख भनु जो काम का न गद्द ह पंडित भनु तेहि हो ॥ २४ ॥

शंभु सुख जिअ के रावस्त्र शेषे रा चंद्रमा ॥ विष्णु स्मरण मात्रे रा महांत
कर शं पुटे ॥ २३ ॥ लेखक पाठ कछे वये चान्ने शास्त्र वितका ॥ सर्वे व्य
सनि तो मृटा क्रिया वंत अ पंडिता ॥ २४ ॥ वज्र मुक्ता श्व वाणिज्य राज
सेवा तपो वन ॥ धीर अश्व त्वारि ऊर्वतिका तरा का विवाह का ॥ २५ ॥ वजे
दुनाथी विवाणिज्य विद्यार्थी च वक्र कृता ॥ अनुराग लमपत्न्यार्थी माना
थी नृपति व्रजेत ॥ २६ ॥

हेर मोति घोडा को व्यापार राजा को सेवा तपस्या इचार काम शानि जन ले गन्या दुनू का
तर जन ले रेवेति गर्ह त ॥ २५ ॥ धन इछा गन्या ले व्यापार गर्ह त विद्या को इछा गन्या ले
वक्र त शास्त्र पुरुष न पुत्रार्थी ले अनुराग लमा भोग गर्ह त मोत इछा गन्या ले राजा को सेवा

॥ ३० ॥

॥ २६ ॥
गद्द नृ ॥ २६ ॥

पंडित छतपनी दुर्जनभया तस्को संगतगर्त तसदे विडराउतु मणिभयाकासप
देवी कसोगरिनडराउतु ॥ ३५ ॥ गाइत राखाइइद दिछ सपइद पियाविछ
दिछ सुपात्रकोरु पात्रकोरुति केरुई छ ॥ ३६ ॥

दुर्जन परिहर्तव्य शास्त्रेणालंकृतोपिसन् ॥ मणिनाभूषितसर्प
किमसौनभयकर ॥ ३५ ॥ पात्रापत्रविशेषेण धेनुपन्नमयोऽरिब
॥ तृणान्ति स्रवते क्षीरं क्षीरान्ति स्रवते विषं ॥ ३६ ॥ क्षुद्रश
त्रुमिति ज्ञात्वानोपेक्षेन कदाचन ॥ काले दुर्जनतां याति तृणस्थं
वह्निबीजवत् ॥ ३७ ॥ षष्टिके करके दोषा अशीतिमधुपिङ्ग
ले ॥ शतं काने च षोडश कुञ्जस्या तं न विद्यते ॥ ३८ ॥

साउशत्रुधमनी हे लानगर्त सुत्ताका बांसमाको आगासाउछ तपानिको हिछरि
मासलकं छरुभस्मपाछ तसेको हि समयमा शाउशत्रुलो कं छरुभस्मपाछ ॥ ३९ ॥
डेरुमनुष्यछेउं ६० दोषकुं छ कुइपाछेउं ८० दोषकाणाछेउं १०० दोषरेवारी
उछेउं १०० दोष कुआछेउं दोषको संख्याछेन ॥ ३८ ॥

॥ ३२ ॥

दरवार बलछ आऊ दुर्जन छ तसा छेउं विश्वास गर्नु छैन विश्वास गयाना हो
ला ॥ ३९ ॥ कबलाले कबलोपनिका छ सा होपनिका छ कबलाले सिद्ध
न भया काज केहि छैन सबेचाहि लाग्या केवलै हो ॥ ४० ॥

स्थान कूटे हर चारे मित्र स्नेह परित्यजेत् विश्वास समये कार्य वि
नाश उपगच्छति ॥ ३९ ॥ मृदु नैव मृदु हति मृदु ना हति दारुणं
॥ नासाध्यं मृदु ना किंचित् समान्ती क्षातरो मृदु ॥ ४० ॥ वने अ
ञ्चलितो बहिर्दह नृलानि रक्षति ॥ समूलमुन्मूलयति आयोजो
मृदु शीतलं ॥ ४१ ॥ स्थूलरोमावली वर्द्ध कन्या च वदु भाविणी ॥
उषरानि च छेवाणि दुरत परिकर्जयेत् ॥ ४२ ॥

॥ ३२ ॥

अग्नि भया को सा हो हो उछालो लाग्छ र सबे भस्म पाछे जरा तराछ पानि भया
को कामल होत पति खोला का छेउ को मुख बोला ले जरा मुझा हव वगउं छ जरा
पति रा मुनै न ॥ ४१ ॥ जुलो से भया को गो रु वदुत कुरा गन्या कन्या रु खो खेत इन को
प्रसंग भगवत् ॥ ४२ ॥

दृष्टं जनसितविश्वासनगर्भं उल्लसितपतिरुगरानगर्भं वोरिमित्रदुर्वैपक्षनगर्भं
॥ ५१ ॥ अन्यायी मंत्री कुन्या राजा श्रुतिरागि स्त्री गन्धाको ब्राह्मण उत भंगकु
न्या अतीतज्ञानि जनैले एतको सेवानगर्भः ॥ ५२ ॥

नगछे दुष्टविश्वासं न कुर्याद्वलविग्रहं ॥ आत्मनापितथाको
धर्मित्रवेरं न कारयेत् ॥ ५१ ॥ कुनये मंत्रि राजा न विप्रचक्ष
वली पाति ॥ प्रवाजिन उत भुङ्क्ष्व न सेवति सदा बुधः ॥ ५२ ॥ ऊ
मंत्रो नास्ति विश्वासं कुभार्यायां कुतोरति ॥ कुराज्ये नास्ति निर्व
त्रिकुदंशे नास्ति जीवितः ॥ ५३ ॥ नास्ति सत्यं सदा चौरैर्न शोच
व्यलिपतो ॥ मध्यपे सो हृदं नास्ति श्रुतकारे न यनदि ॥ ५४ ॥

कुमन्त्री छेउं विश्वास कुदेन कुस्त्री छेउं प्रीति कुदेन कुराज्ये माजीवका कुदेन कु
राजा छेउं केहि मिलेदेन ॥ ५३ ॥ चौर छेउं सत्य कुदेन रौतेरि स्वास्ति भयाका
ब्राह्मण छेउं अचार कुदेन मदयान्या छेउं मित्रता कुदेन जुवाया छेउं इति ने
थोक कुदेन ॥ ५४ ॥

बालक

॥३३॥

उद्वासाकार अग्निवासाकार उर्वेखी पुरुषका गुरु शिष्यका महादेवर व
साहाका माहवाहनजातुः ॥ ५५ ॥ जमगुं यान्ता छेन दानशीले छेन इपांच व
सुनभयाकागुं कोमंगगर्नु छेनः ॥ ५६ ॥

द्वेविशेविप्रमग्निचंदपत्नेर्गुरु शिष्ययोः ॥ अंतरं नैव गंतव्यं हर
स्पृष्टवमस्पृष्टाः ॥ ५५ ॥ लोकयात्राभयं लजादाक्षिरागं त्याग
शीलताः ॥ पंचयत्रतविद्यं तेन कुव्यात्तन्नमंगतिः ॥ ५६ ॥ नोजनं
शुक्लतां याति वैकल्पं च बहुकृतः ॥ ननारी स्थिर उद्दिष्टान्नमूर्ख
संस्कृतं वदेत् ॥ ५७ ॥ अशाशेषो अग्निशेषश्च व्याधिमेषस्तथै
व च ॥ पुनर्वदुं यते यस्मान्न स्याद्विषं न कारयेत् ॥ ५८ ॥

॥ ३४ ॥

गांजलशेतो कुंदेन विकल्पमनकुव्याद्वेत् पठनु कुंदेन स्त्री द्वेत् स्थिर उद्दिष्ट
देन मूर्ख द्वेत् संस्कृतवाणी कुंदेन ॥ ५७ ॥ अशाकोशेष अग्निकोशेष एगको
शेषनरायणु फेरिवत् ॥ ५८ ॥

मनउदासकृत कलहगुण करउनु जुवालेखन मदपिनु द्विनारकृत निद्राकृत मेथ
नगुण अलसिकृत एतिथोकसेवनगयावठ न्याछुन ॥ ५९ ॥ परस्त्री परधन परा
पवाद परिहास एतिथोकगुरुस्थानमाहं नगुनः ॥ ६० ॥ ॥ ॐ ॥

उद्वेग कलहकंडु द्यूतमद्य परस्त्रियः ॥ निद्रामेथुन मालस्यं सेवते
तद्विद्वते ॥ ५९ ॥ परदार परस्वच परिवाद पूरुस्वच ॥ परिहासेण
रुस्थाने दूरत परिकर्षयेत् ॥ ६० ॥ परोक्षे कार्य हंतारं प्रत्यक्षे प्रिय
वादीनः ॥ वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुं भययोमुखं ॥ ६१ ॥ कुदेशं च कुवृ
त्रिच कुभार्या कुनदी तथा ॥ कुप्रस्यं च कुभोज्यं च वर्जयेत्पंडितः मदः ॥

कैलापरिकाजहान्या मुख्याजिमिठोगरिवोल्न्या सस्तामित्रको प्रसंगनगुनं विषलेभ
न्याकागायिका मुखमाहा दूदलेलाक्याजस्तोहो ॥ ६१ ॥ कुदेशकुकर्मगउंकचरि
त्रकीस्त्री अगमनदि कुप्रव्य कुअन्न ज्ञानीजनले एतिथोक द्वाछुनः ॥ ६२ ॥

चावक
॥ ३७ ॥

उर्वशी मेतकारं भाति शेष मागो पालिडन रुह स्वर्ग को मुख्य अपराह नृ एसिरूप
वति भयापति परस्त्री प्रसंग मनु छैन शानि जनले ॥ ६३ ॥ आकले आरंभ गये
को कार्य अकाले हाने र विगारि दियो तपति उसलाइ विपति पदा आहु कार्य सिद्ध
हुन्या भयापति शानि जनले हानु छैन विपति माहान्या को बडे दोष छ ॥ ६४ ॥

उर्वशी यदि रूपेण रंभाय दितिलोत्तमा ॥ गोपाली मेनका चैव वर्जनी
या परस्त्रियः ॥ ६३ ॥ येषु कार्यषु लुप्रेषु सहसा विफलोदयः ॥ विपत्ति
षु महादोष परिवर्जै दिवक्षराः ॥ ६४ ॥ भक्ता भक्तं समं यस्य कार्यकार्यं
चतुल्लभतां ॥ सदा कार्येषु सन्देहो भेतव्यं सर्वदा बुधैः ॥ ६५ ॥ भेतव्यमकु
ली नानां राजा परोपजीविनां ॥ भेतव्यं ज्ञात सचुराणं कृत्वा पूर्वपकारिणा

भक्त अभक्त हेरि कन भला मंदा कार्य लाउनु कार्य गर्दा शानि जनले उरमा निगनु ॥ ६५ ॥
उच्च नीच को कमाइ आन्या देखी राजा देखि उर उनु जोग्य आहु मर्म जान्या शत्रु देखि उर
उर अघि उपकार गन्य सिन पति उर उनु ॥ ६६ ॥

॥ ३५ ॥

रुखको भय वायु पत्रको भये तुमारे पर्वतको भय वज्र जीवाजंतुको भये मनुष्य ॥ ६१ ॥
आमाहो विषदिन्याभया बाहुले देवनलान्याभया राजाले अन्यायगर्न लाग्यो रक्षा
गर्न्यो अर्को को छ ॥ ६२ ॥

पादपानां भयं वात पद्मानां शिशिरे भयः ॥ पर्वतानां भयं वज्रो जंतु
नां द्विपदो भयः ॥ ६३ ॥ माताय दिवि बंद्यात् पिता विक्रियते सु
तः ॥ राजा हरति सर्वस्वं को मेघात्ताभविष्यति ॥ ६४ ॥ पत्रराजा स्व
यं चौरसमं त्रीसपुरे हितः ॥ तत्राहं किं करिष्यामि यतो रक्षानतो भ
यः ॥ ६५ ॥ विधातुलिखितायस्य ललाटे क्षरमालिका ॥ देवोपि
न हि शक्नोति उच्चिख्य लिखितं पुनः ॥ ७० ॥

जस देशमाह मंत्रिपुरे हित राजा आफे आफे चोर भया कस्को क्या लाग्यो जहा बाट
रक्षा हुन्या हो तहां बाट भय आयामा क्या गर्नु ॥ ६६ ॥ विधातुले ललाटे माहाले
ख्याका अछेर मेटिकन देबले पनि अर्को अक्षर लेखनु सक्ने नः ॥ ७० ॥

यानक
॥ ३५ ॥

कर्मलेनदिया बुद्धिको केहि लागे देन कर्मकादि दानि बुद्धि हुंगे देवता हुंछ ॥ ७१ ॥
भुभवेला पारिकन भला दिन मा सीता को विवाह भयो सो मत दिना बशिष्ठ मुनि
ने पतिकर्मका न दिया सीता जी ले दुख पाइ न ॥ ७२ ॥

कर्मणो हि प्रधानेन बुद्धिना किं प्रयोजनं ॥ पारवाणस्य कुतो बु
द्धिस्तदेवौ भवी व्यति ॥ ७१ ॥ कर्मणमपि प्रधानानि सन्ति
कृष्टे भुभे ग्रहे ॥ बशिष्ठ दत्त लगे पि जान कि दुख भागिनी ॥ ७२ ॥
सानु कुले म वेत्ता स्मिन् दोषोपि गुणसंहतिः ॥ गुणोपि दोषतायां
तिवक्त्री भूते विधातरि ॥ ७३ ॥ किं करोति नर प्राशः प्रेयूमाणा
स्वकर्मभिः ॥ प्राथरो व मन व्याणा बुद्धि कर्मनि सारिणी ॥ ७४ ॥

विधाता को कृपा कुदा कु कर्म पति सु कर्म हुंछ न विधाता विमुख कुदा सु कर्म
पति कु कर्म हुंछ न ॥ ७३ ॥ मनुष्य को बुद्धि भया पतिकर्म का अंश ले घुमाउ
छ न कर्म का अनुसार बुद्धि पति हुंछ ॥ ७४ ॥

॥ ३६ ॥

हस्तकोशोभादानगर्तुगलाकोशोभासत्यबोलनकातकोशोभाधर्मकथासु
ॐ गहनालगाउनुक्याप्रयोजनछ ॥ ७५ ॥ स्त्रीकोशोभासुवरित्ररुखको
शोभाफलफलपुरुषकोशोभासुसीतस्वामिकोशोभादया ॥ ७६ ॥

हस्तस्यभूषणदानसत्यकंठस्यभूषण ॥ श्रुतंचभूषणकरेणभूष
णेकिंप्रयोजन ॥ ७५ ॥ चरित्रभूषणस्त्रीणादुमाणापुष्पभूषण
॥ स्ववृत्तिभूषणपुसापतीमाभूषणरूपा ॥ ७६ ॥ नक्षत्रभूषण
चंद्रनारिणभूषणपति ॥ पृथिविभूषणराजाशितिसर्वत्रभूष
ण ॥ ७७ ॥ महतापरिभवंश्रेष्ठननीचानामनुत्तम ॥ कंसापि
दद्यातेनकालियस्यविभूषण ॥ ७८ ॥

नक्षत्रकोशोभाचंद्रमास्त्रीकोशोभास्वामि पृथिविकोशोभाराजासर्वेकोशो
भाशिलि ॥ ७७ ॥ वडाकोलातनिकोनिचकोमानननिकोकसोभन्याधीकृष्ण
जीलेकालियेनागकाकपातमाहालातमारिवस्ताकालियनागकोकसोशोभाभ

वडाकोलातनिको ॥ ७८ ॥

॥ ३६ ॥

धरि ती मा को पा नि शु चि : ति व ता स्त्री शु चि क्ष मा व त रा जा शु चि सं तो वी वा हा रा
 शु चि ॥ ७९ ॥ भै व गाय को पा नि शु चि आ फे व स्या को पा नि शु चि मा थि को पा
 नि शु चि म ले मू त ली प्र ग ड मा को न व ग्पा को छे डे र व ग्पा को पा नि शु चि ॥ ८० ॥

अ वि भू मि ग तं तो यं अ वि त री प ति व ता ॥ शु चि क्षे मं क रो रा जा सं
 तो वा वा हा रा शु चि ॥ ७९ ॥ अ वि भू मि ग तं तो यं य त्र ले पो न वि
 द्य ते ॥ ले पे स्था नं प रि त्य ज्य अ न्य स्था ने शु चि शु चि ॥ ८० ॥ भ
 स्म ना शु द्ध ते का स्यं ता मु म स्ते न शु द्ध ते ॥ र ज सा शु द्ध ते ना री न
 दी वे जे न शु द्ध ते ॥ ८१ ॥ पि तु रं त प रं द द्या मा तु रं द द्या न्न ह न
 सं ॥ गो त्रे स्वा त्म सं मं द द्या त्स्व मं ने व क्क षिं व जे न ॥ ८२ ॥

र व रा ने ले का सो थु द्धं अ मि ला ले ता वा थु द्धं अ नु स्ता न ले स्त्री थु द्धं
 वे ग च ल्या की न दि थु द्धं ॥ ८१ ॥ पि ता को अ भि लि नु मा ता को भा न्ना य नु गो ति
 या को जि उ आ त्म जि उ ए के मा नु आ फु ले रे वि ति ग नु ॥ ८२ ॥

॥ ३७ ॥

॥ ३७ ॥

आशा अश्वमेध
 2359
 ASHA ARCHIVES